विष्णुपुराण में वर्णित विष्णु– भक्ति का स्वरूप

अरुण कुमार

सनातन धर्म के प्राणभूत पुराणों का धार्मिक महत्व स्वयं सिद्ध है और सनातन धर्म में ये वेदों के तुल्य ही समादृत हैं। जनमानस में इनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। विष्णुपुराण की रचनापरक प्रवृत्ति धर्मोन्मुखी है जिसमें वैष्णव मत का समुचित परिपाक प्राप्त होता है। इसके वर्ण्य– विषयों में विष्णु के आराध्य पक्ष को प्रधानता दी गयी है। इसमें यह प्रदर्शित किया गया है कि विष्णु के स्वरूप में ही विश्व का सृजन, संरक्षण तथा संहरण संन्निहित है तथा उनकी ही भक्ति से मुक्ति संभव है। क्योंकि भक्ति ज्ञान और कर्म की अपेक्षा उत्तम सुलभ तथा सरल है।